कविग्राम

वर्ष 3, अंक 8, सितम्बर-अक्टूबर 2022

विज्ञान से उपजी संवेदना

कविग्राम

वर्ष 3, अंक 8, सितम्बर-अक्टूबर 2022

परामर्श मण्डल
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

सम्पादक
चिराग़ जैन

अतिथि सम्पादक
पंकज प्रसून

सह सम्पादक
मनीषा शुक्ला

प्रकाशन स्थल
नई दिल्ली

प्रकाशक
कविग्राम फाउण्डेशन

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।
कविग्राम में प्रकाशित लेख तथा कविताओं में व्यक्त विचार उनके रचयिताओं की निजी राय है।

मूल्य : निःशुल्क

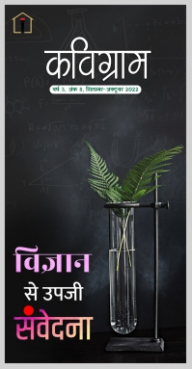

आवरण सज्जा : प्रवीन अग्रहरि

kavigram.com
TheKavigram@gmail.com
kavigramfoundation
facebook.com/kavigram
youtube.com/c/KaviGram
8090904560
thekavigram
thekavigram

यह पत्रिका प्रतिमाह निःशुल्क प्राप्त करने के लिए कृपया हमें 8090904560 पर अपना नाम, व्हाट्सएप नम्बर, जन्मतिथि, पिनकोड तथा ईमेल आई डी लिखकर भेजें।

अनुक्रम

भीतर के पृष्ठों पर

सम्पादकीय / विज्ञान से उपजी संवेदना / चिराग़ जैन / 04
आवरण कथा / विज्ञान कविता की यात्रा / पंकज प्रसून / 06
निबंध / साहित्य पर विज्ञान का प्रभाव / रामधारी सिंह दिनकर / 10
हिन्दी दिवस विशेष / हिन्दी भाषा / अजय कुमार मिश्र / 19
वटवृक्ष / हिरोशिमा / सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय / 20
वटवृक्ष / रेडियम की छाया / गिरिजाकुमार माथुर / 21
वटवृक्ष / नरेश मेहता / उत्सव नक्षत्र / 22
गुलमोहर / गणित का गीत / मुकुट बिहारी सरोज / 23
फुलवारी / ऊर्जा का विज्ञान / रामायण धर द्विवेदी / 24
फुलवारी / मजबूरी के अभियन्ता / अभिषेक औदिच्य / 25
फुलवारी / विज्ञान का दीपक / मानवर्द्धन कण्ठ / 26
ग़ालिब की गली / ग्लोबल वार्मिंग / पण्डित सुरेश नीरव / 27
विनोद / सूर्य ग्रहण / गुरु सक्सेना / 28
कविता चली विदेश / ब्रिटेन में कवि-सम्मेलन / तरुण कुमार / 29
कवि-सम्मेलन संग्रहालय / 37
कवितैव कुटुम्बकम / पार्टनर! कविता जैसी स्टोरी बना दो / अशोक चक्रधर / 38
श्रद्धांजलि / 43

कवि-सम्मेलनों के उन्नयन, शोध तथा आकादमिक महत्त्व को प्रतिष्ठापित करने के लिए कविग्राम अनवरत प्रयासरत है। कविग्राम डिजिटल मासिक पत्रिका प्रतिमाह लगभग 15000 लोगों तक निःशुल्क पहुँचाई जाती है। आप यह पत्रिका अपने सम्पर्कों तक प्रसारित करके कविग्राम का सहयोग कर सकते हैं। यदि आप कविग्राम का कोई आर्थिक सहयोग करना चाहें तो निम्नलिखित बैंक खाते में स्वेच्छानुसार राशि जमा करके रसीद 8090904560 पर प्रेषित करें। (80जी तथा 12ए पंजीकृत)

Account Name : KAVIGRAM FOUNDATION
Account No : 921020054988086 / IFSC : UTIB0004672
PAN : AAETK6435B

विज्ञान से उपजी संवेदना

विज्ञान और कविता परस्पर विरोधी जान पड़ते हैं। इसीलिए जब कोई विज्ञान कविता की बात करता है तो ऐसा लगता है जैसे कह रहा हो कि कोई 'काल्पनिक वास्तविकता' सुनाओ। लेकिन पिछले दिनों एक विज्ञान कवि-सम्मेलन में काव्यपाठ किया तो मैंने अनुभव किया कि यदि कल्पना वास्तविकता में बदल जाए तो उसकी उपयोगिता कई गुना बढ़ जाएगी। यदि कविता, वैज्ञानिक धरातल पर भी सटीक हो जाए तो वह अधिक दूर तक यात्रा कर सकेगी।

बस, इसी विचार से भरकर तय किया कि कविग्राम का अगला अंक विज्ञान कविता पर केन्द्रित रहेगा। लखनऊ के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक तथा व्यंग्यकार पंकज प्रसून जी को इस अंक के प्रकाशन में सहयोग का दायित्व दिया, जो उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। पंकज जी ने समय से पहले ही अपेक्षित सामग्री प्रेषित कर दी थी, लेकिन दिनकर जी का विज्ञान संबंधित निबंध पढ़कर इस अंक की संयोजना कुछ विरोधाभासी लगने लगी थी। पूरे एक माह तक मैंने स्वयं को इस द्वन्द्व से बाहर निकालने के लिए अध्ययन किया और अंततः इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि विज्ञान और कविता हर युग में परस्पर सहयोगी रहे हैं। मैंने प्रतिष्ठापित तथा लोकप्रिय काव्य में समाविष्ट वैज्ञानिक तथ्यों एवं तकनीकी बिम्ब विधान को खोजकर पाया कि विज्ञान केवल साइंस का हिन्दी अनुवाद नहीं है। बल्कि वह कोई भी विषय जो तकनीक और शोध अथवा अनुसंधान के माध्यम से तथ्यों को सिद्धांत के रूप में स्पष्ट बनाता है उसे लक्षणात्मक रूप से विज्ञान कहा जा सकता है।

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'हनुमान चालीसा' में धरती से सूर्य के बीच की दूरी एक अर्द्धाली में लिख दी - 'जुग सहस्त्र जोजन पर भानु'। क्या यह विज्ञान कविता का उदाहरण नहीं कहा जाएगा? प्रसाद जब कामायनी में लिखते हैं - 'ऊपर हिम था, नीचे जल था, एक तरल था, एक सघन। एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन'; तो क्या कवि ने इसमें भौतिकी की गली से होते हुए तत्व विज्ञान तक की यात्रा नहीं करा दी है? रघुवीर सहाय जब रामदास कविता में हत्या का वर्णन

करते हुए लिखते हैं - 'हाथ तौलकर चाकू मारा, छूटा लोहू का फव्वारा' -तो क्या इस पंक्ति को पढ़कर यह नहीं समझना चाहिए कि कवि ने जैवविज्ञान के इस सिद्धांत को कविता में समाहित किया है कि हमारी धमनियों में लहू पूरे वेग से बहता है।

स्वयं रामधारी सिंह दिनकर, जो विज्ञान को सभ्यता के लिए संकट मानते हैं, वे भी विज्ञान के संवेदनशील हो जाने का इशारा रह-रहकर करते दिखाई देते हैं। वे कल्पना तथा सृजन की ताक़त को संवेदनहीन यन्त्रों की दासता से मुक्त रखना चाहते हैं, ठहरकर उनके इस काव्यांश को पढ़ें तो उनकी मंशा समझ आती है- 'बेजान, यन्त्र-विरचित गूंगी, मूर्त्तियाँ एक दिन बोलेंगी, मुँह खोल-खोल सब के भीतर, शिल्पी! तू जीभ बिठाता चल। लोहे के पेड़ हरे होंगे, तू गान प्रेम का गाता चल।'

इतना ही नहीं, आँसू और मनोभाव पर जो कविताएँ लिखी गई हैं वे सभी विज्ञान में स्वीकार्य हार्मोनल रीएक्शन की पुष्टि करती हैं।

मेरे विचार से, कविता और विज्ञान में केवल इतना अंतर है कि विज्ञान व्यवहारिकता के धरातल पर खड़ा होकर कल्पना करता है और कविता कल्पना के आकाश में उड़कर व्यवहार करती है। विज्ञान और कविता एक दूसरे के विलोम नहीं, अपितु पूरक हैं। कल्पना को सिद्धान्त के ताने-बाने से साकार करना विज्ञान का काम है और सिद्धान्त को कल्पना की कुक्षि से उत्पन्न कराना कविता का धर्म है। रामायण के पुष्पक विमान की कल्पना ही वायुयान का रूप लेकर साकार हो सकी है। भारतीय पौराणिक साहित्य में विज्ञान की प्रचुरता सर्वविदित है। कविता औषधि का सूत्र भी लिखेगी तो उसे सरस बना देगी और विज्ञान प्रेम की मनोदशा को भी कैमिकल और हार्मोनल एक्टिविटीज़ के सिद्धांतों में फँसाकर नीरस कर देगा।

चूँकि, विज्ञान के अनेक आविष्कार मनुष्य जाति के लिए घातक सिद्ध हुए हैं, इसीलिए कोमल हृदयी कवियों ने सामान्यतया विज्ञान को हेय मान लिया। लेकिन मेरा मानना है कि विज्ञान ने कोई भी आविष्कार मानवता के ध्वंस के लिए नहीं किया। अर्थ के लोभ में मनुष्य ने चाकू से तरकारी बिनारने की बजाय हत्या करना शुरू कर दिया तो इसमें बेचारे चाकू का क्या दोष!

चिराग़ जैन

विज्ञान कविता की यात्रा

■ पंकज प्रसून

कवि और वैज्ञानिक दोनों का कार्य लगभग समान रहता है। दोनों ही सृष्टा और द्रष्टा होते हैं। दोनों का उद्देश्य एक ही होता है - जीवन को सहज और आनन्दमय बनाना। वैज्ञानिक इसे नवीन अविष्कार के द्वारा करता है और कवि इसे सरोकार के द्वारा करता है। दोनों ही स्थापना करते हैं; वैज्ञानिक मानवता की तो कवि मानवीय मूल्यों की।

कविता, विज्ञान संचार का महत्वपूर्ण माध्यम है। जब विज्ञान को कविताओं के माध्यम से कहा जाता है तो वह विज्ञान कविता कहलाती है। यूँ तो विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने की तमाम विधाएँ हैं, जैसे कथा, कहानी, कार्टून, रेडियो-वार्ता, नाटक, फीचर, समाचार-कथा, गल्प आदि। इन विधाओं के बीच विज्ञान कविता एक ऐसी विधा है जो इन समस्त विधाओं की सहोदर है। विज्ञान कविता में विज्ञान के तथ्यों, सिद्धान्तों व परिभाषाओं को कविता के नियमों का पालन करते हुए रसमय और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, जिससे श्रोता या पाठक सिर्फ आनन्दित ही नहीं बल्कि जागरूक भी होता है।

विज्ञान के तकनीकी और पारिभाषिक शब्दों को कविता की तारतम्यता भंग किये बिना आकार देना श्रम-साध्य कार्य है। इसलिए रचनाकार के लिए विज्ञान की गूढ़ जानकारी के साथ-साथ छन्द के नियमों का प्रायोगिक ज्ञान भी होना आवश्यक है। गीत, ग़ज़ल के अतिरिक्त हास्य-व्यंग्य के माध्यम से मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक विज्ञान लेखन किया जा सकता है।

विज्ञान कविता का उद्देश्य केवल विज्ञान के सिद्धान्तों को समझाना ही नहीं, बल्कि उन सिद्धान्तों को समाज से जोड़ते हुए विसंगतियों पर

प्रहार करना भी है। समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, बुराइयों और कुरीतियों को इस माध्यम से बेहतर और प्रभावी ढंग से दूर किया जा सकता है। विज्ञान कविता आपको विज्ञान-जगत् की सैर कराते-कराते सत्य के मानवीय धरातल पर उतारती है और कविता सीधे-सीधे समाज और मानव से जुड़ जाती है।

हमारी पूरा वैदिक विज्ञान, कविता ही है और पूरा का पूरा छंदबद्ध भी है। पर्यावरण विज्ञान को समाये हुए ऋग्वेद; सर्जरी की तकनीकों को बताती सुश्रुत संहिता और आयुर्वेद का महाग्रन्थ चरक संहिता... सब कविताओं में ही है। लेकिन आज हमारे पास विज्ञान कविताओं का अभाव है। बहुत से रचनाकारों को यह भी नहीं पता है कि विज्ञान कविता का अर्थ 'विज्ञान पर कविता' नहीं बल्कि 'विज्ञान की कविता' है।

बच्चों में वैज्ञानिक चेतना जागृत करने का इससे सुलभ माध्यम और कोई नहीं है। आज भी हमारे बच्चे 'हाथी राजा कहाँ चले'; 'मछली जल की रानी है' जैसी कविताओं से ऊपर नहीं उठ पाए हैं। यदि उनको इसी शैली में विज्ञान कविताएँ सिखायी जाएँ तो उनमें विज्ञान के प्रति अभिरुचि जागृत होगी। नीरस प्रतीत होने वाले विज्ञान में उनको रस दिखायी देगा। हो सकता है कि वे वैज्ञानिक बनें। हो सकता है कि भविष्य में वह देश के लिए नोबल पुरस्कार भी लेकर आएँ। एक ऐसी ही कविता मैंने लिखी है। जिसमें बिना डीएनए की परिभाषा दिये बच्चे को इसके बारे में बता रहा हूं-

दादी कहती नाक तुम्हारी दादाजी से मिलती है
नानी कहती हँसी तुम्हारी नाना जैसी खिलती है
चाची कहती चाल तो एकदम चाचा वाली पायी है
ताई कहती आदत पूरी ताऊ जी से आयी है
पापा कहते गर्व हमें हैं आने वाली पीढ़ी पर
पीढ़ी को चढ़ते जाना है डीएनए की सीढ़ी पर

विज्ञान कविताएँ 2005 से पहले छुटपुट ही लिखी जाती थीं। व्यापक रूप से विज्ञान कविता लेखन का दौर तब शुरू हुआ वह देश की लोकप्रिय पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' के तत्कालीन सम्पादक प्रदीप शर्मा ने विज्ञान कविताओं का कॉलम शुरू किया। उन्होने कई कवियों से

ग्लोबल वार्मिंग, एसिड रेन, परमाणु ऊर्जा , हिग्स बोसोन जैसे विषयों पर कविताएँ लिखवायीं।

बात 2013 की है जब सरदार मनमोहन सिंह देश को परमाणु ऊर्जा सम्पन्न राष्ट्र बनाने के लिए जगह-जगह न्यूक्लियर रिएक्टर स्थापित कर रहे थे लेकिन इसका जगह-जगह विरोध हो रहा था। यह विरोध विदेशी एजेंसियों द्वारा प्रायोजित था। तमिलनाडु के तिरुनेवेली जिले में स्थापित हो रहे 'कुडनकुलम न्यूक्लियर पावर प्लांट' का भी बहुत विरोध हो रहा था। इस स्थिति में ऐसे साहित्य की आवश्यकता महसूस हुई जो आम लोगों को जागरूक कर सके। विज्ञान प्रसार और न्यूक्लियर पॉवर कॉरपोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड ने मुझे परमाणु ऊर्जा विषय पर कविता की किताब लिखने का जिम्मा सौंपा। 'परमाणु की छाँव में' शीर्षक से किताब छपी जिसकी हज़ारों प्रतियाँ निशुल्क बाँटी गयीं। यह किताब विश्व में परमाणु ऊर्जा पर किसी भी भाषा में लिखी गई पहली काव्य पुस्तक बनी और इसे एशिया बुक ऑफ रिकॉर्डस में भी जगह मिली।

वर्ष 2018 में देश के सबसे बड़े विज्ञान महोत्सव 'इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल' की मेजबानी लखनऊ को मिली थी। भारत सरकार के जैव प्रोद्योगिकी विभाग ने देश भर से आये लगभग 4000 बच्चों के लिए विज्ञान कविता की कार्यशाला आयोजित की। यह बेहद सफल कार्यशाला रही। 14 भाषाओं में 350 बच्चों ने विज्ञान कविताएँ लिखीं और उनमें से श्रेष्ठ कविताओं का चयन करके पुरस्कार दिये गये।

कब शुरू हुए विज्ञान कवि सम्मेलन : उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान ने लखनऊ के शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय में विज्ञान लेखन पर एक बड़े समारोह का आयोजन किया था। उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ राजनारायण शुक्ला ने इस कार्यक्रम में विज्ञान कवि-सम्मेलन करवाने का निश्चय किया और इस प्रकार देश का पहला विज्ञान कवि-सम्मेलन 4 अक्टूबर 2019 को लखनऊ में आयोजित हुआ जिसका संचालन मैंने किया और अध्यक्षता पंडित सुरेश नीरव ने की। डॉ रविकांत, मधु मिश्रा और क्षितिज श्रीवास्तव ने इस कवि-सम्मेलन में काव्य पाठ किया। इस कार्यक्रम के बाद देश में विज्ञान कवि सम्मेलनों की अलख जग गयी। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के उपक्रम 'विज्ञान प्रसार' ने वृहद स्तर पर विज्ञान कवि-

सम्मेलनों का आयोजन किया। विज्ञान प्रसार के अधिकारी और कवि मानवर्द्धन कण्ठ ने इसे नाम दिया - 'विज्ञानिका'। विज्ञान प्रसार के निदेशक डॉ नकुल पराशर के नेतृत्व में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ कपिल त्रिपाठी और मानवर्द्धन कण्ठ ने प्रथम 'विज्ञानिका' का आयोजन इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल 2019 में कराया जिसनें पण्डित सुरेश नीरव की अध्यक्षता में डॉ लक्ष्मी शंकर बाजपेयी, नीलोत्पल मृणाल, डॉ गुरुदेव, डॉ शुभरता मिश्रा ने विज्ञान कविताओं का पाठ किया। आयोजन सफल साबित हुआ और विज्ञान प्रसार की ओर से रुड़की, भोपाल और बिलासपुर में इसके भव्य आयोजन हुए।

पंडित सुरेश नीरव ने बड़ी लगन तथा निष्ठा से विज्ञान कवियों की खोज की और यशपाल सिंह यश, रामवरण ओझा, सुरेन्द्र कुमार सैनी, नीरज नैथानी, डॉ कल्पना पांडेय, जयकृष्ण पेन्यूली, दिव्या गुप्ता और अलका घनशाला जैसे रचनाकार ढूंढ निकाले। पंडित सुरेश नीरव ने विज्ञान कविताओं का एक संकलन भी संपादित किया।

इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल -2020 में विज्ञानिका का ऑनलाइन बहुभाषी कवि-सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता साहित्य अकादमी अवॉर्ड से सम्मानित मशहूर विज्ञान लेखक देवेंद्र मेवाड़ी ने की। वर्ष 2021 के इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल में गोवा में बहुभाषी विज्ञान कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कन्नड़, तमिल, तेलुगू, मलयालम, उड़िया और हिंदी भाषा के कवियों ने काव्य पाठ किया। विज्ञान कवि-सम्मेलन शुरू हो गये थे और इनमें राजेंद्र राजन, चिराग़ जैन, शम्भू शिखर, डॉ. रुचि चतुर्वेदी, पद्मिनी शर्मा और मनीषा शुक्ला जैसे नामचीन मंचीय कवियों के नाम भी जुड़े। जिससे विज्ञान कवि-सम्मेलन जनता के बीच में और भी लोकप्रिय हुए।

हाल ही में 12वें राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव में भोपाल के रवीन्द्र भवन में विज्ञानिका का भव्य आयोजन हुआ। श्रोताओं से खचाखच भरे प्रेक्षागृह में विज्ञान कविताओं को जिस उत्साह, उत्सुकता और गर्मजोशी से सुना गया, वह अद्वितीय था।

विज्ञान कविता का कारवां धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। कविता की एक नई धारा बह निकली है। साहित्य और विज्ञान का यह समन्वय विज्ञान जागरूकता के क्षेत्र में किसी क्रांति से कम नहीं है।

साहित्य पर विज्ञान का प्रभाव

■ रामधारी सिंह 'दिनकर'

कवि और वैज्ञानिक के बीच समता क्या है, भेद क्या है? समता सिर्फ एक बात को लेकर है कि कवि और वैज्ञानिक, दोनों प्रेरणा के आलोक में काम करते हैं। जैसे संसार की सभी श्रेष्ठ कविताएँ प्रेरणा की कौंध से जन्मी हैं, उसी प्रकार विज्ञान के भी आविष्कार प्रेरणा की कौंध से उत्पन्न होते हैं। सत्य की झलक पाने के लिए यह आवश्यक है कि हमारी चेतना की सुई ठीक ध्रुव की ओर हो। यह अवस्था समाधि और एकाग्रता से प्राप्त होती है। इसी अवस्था में पहुँचने पर कवि को कविता सूझती है और वैज्ञानिक को आविष्कार सूझता है। लेकिन इस एक साम्य के बाद मुझे कविता और विज्ञान के बीच भेद-ही-भेद दिखायी देते हैं। वैज्ञानिक नियम की खोज में रहता है, शब्दों का व्यवहार वह सुनिश्चित अर्थ के लिए करता है और उसकी हर चीज़ परिभाषित होती है। किन्तु कविता मनुष्य के जिस अनुभूति-क्षेत्र से आती है, उसकी परिभाषा नहीं दी जा सकती। ...और शब्द को सुनिश्चित अर्थ कवि कैसे देगा? वह तो विचार और शब्द, शब्द और उसके अर्थ के बीच भटकता रहता है।

वैज्ञानिक केवल शरीर पर काम करता है। कवि की यात्रा शरीर और आत्मा के बीच है। वैज्ञानिक केवल सत्य को देख सकता है। कविता सत्य, शिव और सुन्दर -तीनों का दर्शन एक साथ कर सकती है।

कविता नैतिक भी हो सकती है तथा अनैतिक भी। किन्तु विज्ञान नैतिक-अनैतिक, कुछ भी नहीं होता। वह दोनों से तटस्थ होता है। (यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि जिस वैज्ञानिक ने परमाणु बम बनाया था, उसने हिरोशिमा-कांड के बाद स्वीकार किया था कि बम

बनाकर मैंने पाप किया है। तब विज्ञान पर भी नैतिकता के नियम लागू क्यों नहीं किये जाते हैं, जैसे वे साहित्य पर लागू हैं?)

विज्ञान मनुष्य के हाथ में जो शक्ति देता जा रहा है, उसका उपयोग मनुष्य किस उद्देश्य के लिए करे, यह बात विज्ञान नहीं बता सकता। किन्तु कविता उसे बता सकती है, यदि कवि केवल शब्दों की आराधना में अपने को समाप्त न कर दे! कविता परदानशीन, आरामतलब औरत है; जो बादलों पर लेटकर फूल सूंघती है। उसके मुख से केवल सुगन्धित वाक्य निकलते हैं।

विज्ञान चीर-फाड़ के कमरे में खड़ा यन्त्र-मानव है, जो केवल फार्मूले बोलता है।

आधुनिक कवि (यूरोपीय से ज़्यादा भारतीय कवि) विज्ञान की नकल करने को ललचा रहे हैं। वे इस बात को भूल गये हैं कि कविता जहाँ-जहाँ से रस और संजीवनी लेती थी, वे सभी स्रोत विज्ञान के ताप से सूखते जा रहे हैं। कौतुक के लिए पद्य की रचना शायद कम्प्यूटर भी कर सकता है। किन्तु विज्ञान को कविता मैं तब मानूंगा जब वह मनुष्य को प्रेरित करने वाली कविता लिख दे। लेकिन यह वह कभी नहीं करेगा। कम्प्यूटर वही चीज़ उगलेगा, जो मनुष्य उसे खिलाएगा। विज्ञान का सारा क्षेत्र मन की सीमा के भीतर है। किन्तु कविता मन की सीमा के बाहर से भी आती है। सुररियलिस्ट कवि मन की सीमा से बाहर जाने वाले कवि थे। वे मन की सतह से भागकर मन के चंगुल से छूटना चाहते थे। वे किसी ऐसी गहराई में पहुँचना चाहते थे, जहाँ मन और विज्ञान नहीं पहुँच सकते। श्री अरविन्द का तो कहना है कि भविष्य की कविता मन्त्र होगी और यह मन्त्र मन से नहीं, मन के क्षितिज के पार से आएगा।

विज्ञान ने मनुष्य के जीवन में जो उलट-फेर कर दिया, जो उथल-पुथल मचा दी, उस पर संवेदनशील कवियों ने विलाप किया है।

औद्योगिक सभ्यता जब इंग्लैंड में ज़ोर से फैली, मैथ्यू आर्नल्ड घबरा गये थे। अपनी एक कविता में उन्होंने लिखा था, "आधुनिक जीवन विचित्र रोग से ग्रस्त हो गया है, जल्दबाज़ी इसकी बीमारी है, उद्देश्य इसके केन्द्रित नहीं, छिन्न-भिन्न हैं। इसके दिमाग़ पर इतना बोझ है कि वह उसे ढो नहीं सकता और इसका दिल हरदम धड़कता रहता है।"

इलियट ने कहा था कि लय के बारे में हमारी आधुनिक धारणा शायद अन्दर से जलने वाले इंजन की गति से प्रभावित हो गयी है। यह स्पष्ट ही

गूढ़ व्यंग्य की उक्ति है, क्योंकि इलियट को वैज्ञानिक सभ्यता से निराशा हुई थी-

मन्दिर बनाने के बदले,
हम प्रयोगशालाएँ बनाते हैं।
यज्ञ करने के बदले,
हम प्रयोग करते हैं।
प्रार्थना करने के बदले,
हम प्वायंटर पढ़ते हैं।
हम मनमौजी होने के बदले,
कार्यकुशल और मुस्तैद हो गये हैं।

कोई यह मत समझे कि आर्नल्ड या इलियट के समय में आकर ही कवियों के भीतर विज्ञान के ख़िलाफ़ प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई थी। यह प्रतिक्रिया रोमांटिक सम्प्रदाय के कवियों में ही उत्पन्न हो गयी थी। एकालाजी से उत्पन्न संवेदना वड्र्सवर्थ में थी और इसी कारण उन्हें पेड़ काटकर कारख़ाना बनाने का काम पसन्द नहीं आया था।

इलियट जिस धारा से उत्पन्न हुए, उसके आदि-स्रोत फ्रेंच के कवि रैंबू थे, जिनका 'इलूमिनेशंस' काव्य 1872 में प्रकाशित हुआ था। लॉजिक और बुद्धिवाद के बन्धन को तोड़ने की प्रवृत्ति तथा मन के धरातल से छूटकर कहीं और निकल भागने का भाव सबसे पहले उन्हीं में दिखाई पड़ा था। विज्ञान शृंखला और अनुशासन क़ायम करता है, क्योंकि उसकी मार्गदर्शिका बुद्धि है। किन्तु मनुष्य के भीतर ऐसी भी शक्तियाँ हैं, जो बुद्धि से बहुत आगे तक देखती हैं, जहाँ लॉजिक के सम्बन्ध काम नहीं करते। रैंबू हमें अराजकता के इसी केन्द्र में धकेल देते हैं, विज्ञान से जन्मी पद्धति और तर्कबद्ध विचारों से मुक्त कर देते हैं। रैंबू का विश्वास था कि कवि अपने मन की गहराई में जहाँ तक डूब सकता है, वहाँ तक डूबकर वह अपनी अनुभूति को वाणी दे और इस बात की परवाह नहीं करे कि उस गहराई में उस लाजिक के नियम चलते हैं या नहीं, जिससे मन की सतह पर हमारा परिचय है।

विज्ञान धर्मनिरपेक्ष होता है, श्रेष्ठ कविता किसी-न-किसी अर्थ में धार्मिक होती है। रैंबू काम के अतिचार के लिए बहुत बदनाम थे, लेकिन यूरोप में ऐसे भी आलोचक हैं, जो उन्हें धार्मिक मानते हैं और कहते हैं कि रैंबू की वाणी धुंधली इसलिए हो गई कि भारतीय रहस्यवाद का उन

पर प्रभाव पड़ा था। विज्ञान द्वारा प्रदत्त सम्पन्नता के मारे जब संसार अपनी आत्मा का तिरस्कार करने लगा, तब रैंबू उस सभ्यता के विरुद्ध विद्रोह बनकर आए थे।

वैज्ञानिक लोग कारीगर, मिस्तरी और मजदूर के समान होते हैं। कवि का स्वभाव किसान के स्वभाव से मिलता-जुलता है। कहते हैं, रैंबू का मिजाज़ भी किसान का मिजाज़ था।

मनुष्य पर प्रभाव तो दुर्जन की भी संगति का पड़ता है। विज्ञान को न हम दुर्जन कह सकते हैं, न सज्जन। फिर भी उसके साथ बढ़ने वाले बुद्धिवाद ने हमारी धारणाओं को बदल दिया है। अतएव यह जानना रोचक है कि विज्ञान का प्रभाव साहित्य पर कहाँ तक पड़ा है।

वैज्ञानिक युग का साहित्य उस युग से पूर्व के साहित्य से किन रूपों में भिन्न है? पहले जब राम या कृष्ण के चरित्र लिखे जाते थे, तब उन्हें धर्म-संस्थापक और दुष्कृत-विनाशक ईश्वरावतार के रूप में चित्रित किया जाता था। यह विज्ञान का प्रभाव है कि अब वे समाज-सुधारक, लोक-आराधक अथवा संशयग्रस्त मनुष्य के रूप में दिखाए जाते हैं। साधुओं और संन्यासियों के चरित्र भी पहले उच्च कोटि के दिखाए जाते थे। केवल 'प्रबोध - चन्द्रोदय' में उन्हें व्यभिचारी के रूप में चित्रित किया गया था। लेकिन, यह अपवाद था। किन्तु 'थाय' और 'चित्रलेखा' में काम के समक्ष संन्यास की पराजय का जो दृश्य अंकित हुआ है, उसे नए ज़माने ने ख़ूब पसन्द किया है। इसी प्रकार अगर कर्ण के रथ के चक्के धरती में धँस गये थे, तो यह बात अब खोलकर कहनी होगी कि वहाँ दलदल था। और कौरवों की सभा में यदि भगवान कृष्ण ने विराट रूप दिखाया था, तो पाठकों को अब यह बात भी समझा देनी होगी कि भगवान के विराट होने पर छतें नहीं टूटी थीं, दीवारें नहीं गिरी थीं। और कच-देवयानी की कथा कहनी हो, तो इसका उल्लेख नहीं करना चाहिए कि कच ने शुक्राचार्य से संजीवनी विद्या कैसे सीखी थी। उस कहानी में कच और देवयानी का प्रेम ही प्रधान है।

विज्ञान और टेक्नोलॉजी के प्रचार से साहित्य के परिवेश में परिवर्तन आ गया और उसका बड़ा भारी प्रभाव साहित्य पर पड़ा है, यह बिल्कुल स्पष्ट है। संध्या के भीतर एथेराइज्ड रोगिणी का रूपक पहले नहीं देखा जा सकता था। वैसे ही 'एल्युमूनियम के हंस' की कल्पना उस समय नहीं की जा सकती थी, जब हवाई जहाज नहीं थे। किन्तु विज्ञान का

प्रभाव रूपकों और बिम्बों तक ही सीमित नहीं रहा है। साहित्य के भीतर वह अत्यन्त गहराई में उतर गया है। उसका प्रभाव साहित्य की शैली पर भी पड़ा है और उससे साहित्य का भाव भी आक्रान्त हुआ है।

भाव-पक्ष में सबसे बड़ा परिवर्तन शायद बुद्धिवाद को लेकर आया है। बुद्धिवाद का चरम प्रभाव यह हुआ कि सृष्टि यन्त्र समझी जाने लगी, जिसके पुर्ज़े गणित और यन्त्रविज्ञान के अनुसार काम करते हैं। इस मान्यता से स्वभावतः ही यह अनुमान निकल आया कि सृष्टि यदि यन्त्र है, तो इसके निर्माण के लिए ईश्वर की कल्पना अनिवार्य नहीं है। फिर खगोलवादियों ने यह कल्पना रखी कि पृथ्वी गोल है और असंख्य गोल नक्षत्रों की तरह वह भी शून्य में लटकी हुई है। इससे मनुष्य की यह कल्पना नष्ट हो गई कि पृथ्वी सृष्टि का केन्द्र है तथा ईश्वर की योजना में उसका कोई ख़ास स्थान है।

तब डारविन का 'जीवों की उत्पत्ति' नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ , जिसमें उन्होंने यह स्थापना रखी कि आदमी ईश्वर का पुत्र नहीं है, वह बन्दर से बढ़कर आदमी हुआ है। फिर मार्क्स आए। उन्होंने स्थापना यह रखी कि धर्म, नैतिकता, कला और अध्यात्म के क्षेत्र में मनुष्य ने जो भी मूल्य निरूपित किए हैं, वे लोकोत्तर मूल्य नहीं हैं। इन मूल्यों का विकास समाज की अर्थव्यवस्था के अनुसार हुआ है। अतएव धर्म-अधर्म, नैतिकता-अनैतिकता तथा पाप और पुण्य की भावनाओं को लोकोत्तर चेतना से सम्पृक्त मानना कोरा अन्धविश्वास है। आदमी अपना कोई भी निर्णय लेने में स्वतन्त्र नहीं है। सभी निर्णय वह उस अर्थव्यवस्था के अनुसार लेता है, जिसमें उसका जन्म और विकास हुआ है। और सबके अन्त में फ्रायड का मनोविज्ञान आया, जिसने यह कहा कि आदमी का जप-तप, योग और वैराग्य, सभी ऊपरी बातें हैं। वह अपने किसी भी कार्य में स्वाधीन नहीं है। उसके भीतर अपनी और मनुष्य-जाति की युगों की अगणित अदम्य वासनाएँ दबी पड़ी हैं और आदमी के कर्म इन्हीं अज्ञात वासनाओं की प्रेरणा का अनुगमन करते हैं। सच तो यह है कि हम इन वासनाओं का उपभोग नहीं करते, ये वासनाएँ ही हमारा उपभोग करती हैं, हम उन्हें नहीं जीते, उन्हीं के द्वारा हम जिये जाते हैं।

मनोविज्ञान की एक अन्य शाखा आचरणवाद ने यह सिद्ध कर दिखाया कि मनुष्य अपने आचरण में स्वतन्त्र नहीं है। परिस्थितियाँ जैसी होती

हैं, मनुष्य का आचरण भी वैसा ही होता है।

डारविन ने मनुष्य से उसका देवत्व छीन लिया। मार्क्स ने आदमी की सदाशयता की जड़ खोद डाली। और फ्रायड ने यह सिद्ध कर दिखाया कि आदमी का अपने को बुद्धिवादी समझना बिलकुल फालतू बात है। सो बुद्धिवाद का असली प्रभाव यह निकला कि आदमी को यह मान लेना पड़ा कि वह बुद्धिवादी नहीं है।

न्यूटन, डारविन, मार्क्स और फ्रायड, इन सभी चिन्तकों का प्रभाव एक-दूसरे को पुष्ट करनेवाला है। किन्तु, वर्गीकरण करने का प्रयास किया जाए, तो पता चलेगा कि आस्तिकता को अवलम्ब देनेवाला आधार सबसे अधिक न्यूटन और डारविन के कारण नष्ट हुआ है, यह कहा जाता है कि न्यूटन ख़ुद आस्तिक मनुष्य थे। साहित्य में जो प्रगतिवादी धारा फूटी, उसके उत्स मार्क्स हैं। और अभिनव साहित्य में जो काम की अन्धी आराधना प्रचलित हो गई है, उस धारा को सर्वाधिक प्रेरणा फ्रायड से मिली है।

जब से समाज में विज्ञान को अपरिमित प्रतिष्ठा प्राप्त हो गई, विद्या की ऐसी अनेक शाखाएँ अपने को विज्ञान कहने को ललचाने लगी हैं, जो सचमुच विज्ञान नहीं हैं। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि अब कवि भी भाव और शैली, दोनों ही क्षेत्रों में विज्ञान का अनुकरण करना चाहता है। चूंकि विज्ञान आवेशमयी भाषा का प्रयोग नहीं करता, इसलिए नए कवि और लेखक भी आवेशमयता से बचे रहना चाहते हैं। चूँकि विज्ञान शब्दों के मामले में मितव्ययी होता है, अतएव नवलेखन भी शब्दों की मितव्ययिता बरतना चाहता है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि शब्दों की मितव्ययिता से साहित्य की शक्ति बढ़ती है। उसे पहले के भी साहित्यकार सदैव बरतते थे। और चूँकि विज्ञान का लक्ष्य वस्तुओं का यथातथ्य वर्णन होता है, अतएव नए लेखक और कवि भी कल्पना की लगाम हमेशा अपने हाथ में रखते हैं और बराबर सतर्क रहते हैं कि उनका वर्णन अतिरंजित न हो जाए। वैज्ञानिक का एक लक्षण यह भी है कि वह दूसरों को प्रभावित करने को न तो एक शब्द लिखता है, न एक शब्द बोलता है। अगर वह दूसरों को प्रभावित करने की इच्छा से लिखने या बोलने लग जाए, तो जनता वैज्ञानिक पर श्रद्धा नहीं, सन्देह करने लगेगी। मेरा खयाल है, यह विज्ञान का ही प्रभाव है कि साहित्य में अब 'ढ़ेटारिक' गुण नहीं, दोष माना जाने लगा है। विज्ञान का एक

गुण यह भी है कि वह निन्दा और स्तुति, दोनों से तटस्थ रहकर सत्य की शोध में लगा रहता है। वैज्ञानिक युग के उत्तम साहित्यकार भी लिखते समय निन्दा और स्तुति से परे रहकर केवल यह सोचते रहते हैं कि जो कुछ वे लिखना चाहते हैं, वह चीज़ ठीक से उनकी समझ में आ रही है या नहीं तथा लिखते समय वे उसी का यथातथ्य वर्णन करते हैं अथवा निन्दा के भय या प्रशंसा के लोभ से कुछ इधर-उधर भी बहक रहे हैं। केवल एक कठिनाई है जिस पर कवियों को विजय नहीं मिल रही है और वह यह कि विज्ञान में एक शब्द एक ही अर्थ देता है, किन्तु साहित्य में एक शब्द से अनेक अर्थ ध्वनित होते हैं। मेरा सोचना यह है कि यह अच्छा है कि कवि इस कठिनाई का पार नहीं पा रहा है। क्योंकि जिस दिन साहित्य में प्रयुक्त शब्द भी एक ही अर्थ देने लगेगा, उस दिन लक्षणा और व्यंजना की लीला समाप्त हो जाएगी और एकमात्र अभिधा पर अवलम्बित हो जाने के कारण साहित्य भी साहित्य न रहकर किसी प्रकार का विज्ञान बन जाएगा।

विज्ञान के प्रभावों को स्वीकृत करने का लोभ सबसे पहले अंग्रेजी के मेटाफिजिकल कवियों में जगा था। मेटाफिजिकल कवि बुद्धि और मन की सीमा से परे देखने की कोशिश नहीं करता, वह चिन्तन का अभ्यासी होता है। वह कल्पना को कुहासे के पास नहीं छोड़ता, चीजों को वह अधिक-से-अधिक पास लाकर देखता है। प्रीति भी ऐसे कवियों में हृदय की वस्तु न रहकर मस्तिष्क की चीज बन जाती है। विचार को भावना के धरातल पर लाकर देखने से मेटाफिजिकल कविता बनती है। मेटाफिजिकल से अध्यात्म की ध्वनि निकलती है, किन्तु मेटाफिजिकल काव्य आध्यात्मिक काव्य नहीं है। डोन आध्यात्मिक कवि नहीं थे, आध्यात्मिक कवि ब्लेक थे और वे मेटाफिजिकल नहीं थे। मेटाफिजिकल विशेषण से तात्पर्य यह है कि जैसे दार्शनिक और वैज्ञानिक अपने तर्कों को ठीक कसावट में रखते हैं, वैसे ही मेटाफिजिकल कवि की कविता में भी तरंग और फेन नहीं, लोहे का कसाव होता है। यहाँ शब्दों में तो मितव्ययिता होती ही है, मितव्ययिता विचार में भी बरती जाती है और कल्पना कभी भी बेलगाम नहीं हो पाती। स्पष्ट है कि यह शैली विज्ञान से प्रभावित होती है, अतएव वह कड़ी और कुछ रुक्ष भी होती है।

मेटाफिजिकल काव्य का आनन्द सम्बुद्धि (इनट्यूशन) की लहर का

आनन्द नहीं होता। यह वह आनन्द है, जो बुद्धि की विजय और तर्कों की सार्थकता से उत्पन्न होता है। विज्ञान और मेटाफिजिकल काव्य-दोनों का ध्येय बुद्धि को संतृप्ति देना है।

साहित्य पर विज्ञान का प्रभाव पड़ रहा है और वह हमारे रोके रुकनेवाला नहीं है। किन्तु सोचने की बात यह है कि क्या वह प्रभाव सर्वथा वांछनीय है? क्या वह अमिश्रित वरदान है? साहित्य के भाव और शैली-पक्ष पर विज्ञान के जो प्रभाव पड़े हैं, उनमें से अनेक वांछनीय रहे हैं, मगर अनेक ऐसे भी हैं, जिन्हें देखकर मुझे चिन्ता होती है। विज्ञान की 'एकुरेसी' यानी यथातथ्यता को अपनाने की चिन्ता कवियों में बहुत अधिक हो गई है और इसे मैं चिन्ता का विषय मानता हूँ। कविता का विलोम गद्य नहीं, विज्ञान है। फिर विज्ञान का अनुकरण हम कहाँ तक करेंगे? 'क्या और क्यों' पर सोचते-सोचते दर्शनों का जन्म हुआ था। 'कैसे' पर सोचते-सोचते विज्ञान उत्पन्न हुआ है। कथ्य दर्शन है, शैली विज्ञान है। अगर कथ्य को छोड़कर हम सारा ज़ोर शैली पर देंगे, तो निश्चय ही कविता से कवित्व का लोप हो जाएगा।

कविता संस्कृति है, सभ्यता विज्ञान है। संस्कृति का नाम सुनते ही हमें कृष्टि, खेती या गाँव की याद आती है। किन्तु सभ्यता नगरों का गुण है। विज्ञान ने महानगरों की संख्या भी बढ़ा दी है और दिनोंदिन वह उनकी संख्या में वृद्धि करता ही जाता है। आज संसार के दस-बारह महानगरों की समस्या मानव-जाति की समस्या समझी जा रही है, दस-बारह महानगरों की रुचि मानव मात्र की अभिरुचि बताई जा रही है। साहित्य पर महानगरों का आज जितना प्रभाव है, उतना प्रभाव पहले कभी नहीं था। इसे भी हम विज्ञान का ही प्रभाव मानते हैं।

वैज्ञानिक सभ्यता सबसे बड़ा ढिंढोरा इस बात का पीटती है कि बुद्धिवाद के तीखे औज़ार से उसने मनुष्य की सभी ज़ंजीरें काटकर उसे सभी दासताओं से मुक्त कर दिया है, जो दावा एक तरह से ठीक भी है। अफ़सोस की बात यह है कि मनुष्य को यही मालूम नहीं है कि इस मुक्ति को लेकर वह क्या करे ! बुद्धिवाद, टेक्नोलॉजी और विज्ञान द्वारा सिद्ध मुक्ति, उस गरुड़ की मुक्ति नहीं है, जो डैने खोलकर आकाश में उड़ता है, बल्कि वह उस कुत्ते की मुक्ति है, जो ज़ंजीरों से छूटकर सड़क पर आ गया है और ट्रॉफिक में कुचल जाने के भय से इधर-उधर भाग रहा है। खुला कुत्ता जो भी चाहे, कर सकता है, जहाँ भी चाहे, जा सकता

है। लेकिन उसे यह कौन बताए कि उसे कहाँ जाना चाहिए और चारों ओर के ख़तरों से अपनी रक्षा कैसे करनी चाहिए। विज्ञान शक्ति देता है, यह बात ठीक है। किन्तु आदमी उस शक्ति का उपयोग किस उद्देश्य के लिए करे, यह संकेत बराबर धर्म दिया करता था। और चूँकि विज्ञान के प्रतापी होने से धर्म निरादृत हो गया, इसीलिए विज्ञान से अर्जित शक्तियाँ मनुष्य के लिए अभिशाप बन गई हैं।

जो साहित्य विज्ञान के प्रभाव में रचा गया है और जो वैज्ञानिक युग के पूर्व रचा के गया था, उन दोनों की तुलना से मुझे तो यही दिखाई देता है कि मध्यकालीन जगत् में केवल दोष-ही-दोष नहीं थे। वह गहरे अन्धकार के साथ उज्ज्वल प्रकाश का भी समय था। यह ठीक है कि उस समय मनुष्य अपने परिवेश को कम जानता था, मगर इसीलिए वह अपनी आलोचना भी थोड़ी ही करता था। जब दुनिया अंधेरी थी, आसमान साफ़ था। जब दुनिया रोशनी से भर गई, आसमान पर अंधियाली छा गई। पहले मनुष्य को सत्य वहाँ भी दिखलाई पड़ता था, जहाँ वह था नहीं। अब जो सत्य है, उस पर भी आदमी का विश्वास टिकता दिखाई नहीं देता है। मध्यकालीन युग केवल तिमिर-ग्रस्तता का शिकार नहीं था, वह आनन्द और सन्तोष से भी प्रकाशित काल था, जब आदमी चीज़ों में विश्वास करता था और ख़ुशी की रोशनी में जीता था। लन्दन के घंटाघर की आवाज़ उस समय संसार भर के लोग भले ही न सुनते रहे हों, लेकिन अपने पड़ोसियों के कराहने की आवाज़ उन्हें सुनाई देती थी। उस समय आँसू आज की अपेक्षा ज़्यादा बहते थे और अधिक सहजता से बहते थे। उस समय कारीगर के बनाए सामान ही बेचे जाते थे, ख़ुद कारीगर नहीं बिकता था।

मध्यकालीनता की ये बातें बड़ी अच्छी थीं। किन्तु विज्ञान की गर्म हवा के लगने से मनुष्य का भावना-स्रोत सूख गया। अब साहित्य में हम ऐसे लोगों का चरित्र-चित्रण देखने लगे हैं, जो मिलते तो बहुत लोगों से हैं, मगर जिनका परिचय किसी से भी नहीं हो पाता। निःसंगता, अकेलापन और ज़िन्दगी से ऊब इस कदर बढ़ गई है कि अब दार्शनिक पूरी गम्भीरता से यह सोचने लगे हैं कि आख़िर ज़िन्दगी जीने के योग्य है भी या नहीं। साहित्य पर यह प्रभाव वैज्ञानिक सभ्यता ने डाला है।

मगर इतना कुछ हो जाने पर भी हमारे हाथ क्या लगा है? आदमी क्या चीज़ है? जन्म के पहले वह कहाँ रहता है? मृत्यु के उपरान्त वह कहाँ

चला जाता है? यह संसार किसी योजना के अधीन है अथवा वह अकस्मात् उछलकर हमारे सामने आ गया है? ईश्वर हो सकता है या नहीं? अगर वह है, तो इसका सबूत क्या है? अगर वह नहीं है, तो इसका क्या प्रमाण है? ये और ऐसे अनेक प्रश्न जो मनुष्य को पहले हैरान करते थे; आज भी हैरान कर रहे हैं। हाँ, पहले का आदमी इन प्रश्नों पर सोचते-सोचते सृष्टि को ईश्वर की लीला कहकर सन्तोष कर लेता था, आज वह यह कहकर इन प्रश्नों से छुट्टी ले लेता है कि सृष्टि एक समस्या है, एक अभेद्य रहस्य है। मुझे लीला और अभेद्य रहस्य में कोई अन्तर नहीं दिखाई देता। ('आधुनिक बोध' पुस्तक से)

हिन्दी दिवस विशेष

हिन्दी भाषा

अजय कुमार मिश्र

हिन्दी सुन्दर पद-छन्दों की, निर्मल-निर्झर सी कविता है
सरस-सहज-सरल शब्दों की, अविचल बहती सरिता है

गंगा-जमुनी तहज़ीब समेटे, समरस समाज का मनका है
देती दुलार अनुजा उर्दू को इसे प्यार मिला जन-जन का है
सुसंस्कृति से सिंचित करती यह संस्कृत की दुहिता है

अवसादों और विषादों के देखे इसने कई गर्त यहाँ
भाषा के वाद-अपवादों में लग चुके कई हैं शर्त यहाँ
धूमिल होते काव्य गगन की, दैदीप्यमान-सी सविता है

कबिरा-रहीम के दोहे चंद, कभी मीरा के प्रेम समर्पण में
कभी पंत, निराला, जयशंकर, महादेवी छाया दर्पण में
वाणी दिनकर-सूर-शरण की, तुलसी मानस की सीता है

नगरी अंधेर भी रौशन होती, दुष्यंत-अटल की ज्वाला से
बोध यथार्थ गोदान-तमस से, राह दिखा मधुशाला से
नीरज नयनों में प्यार जहाँ, मैला आँचल में शुचिता है

हिरोशिमा

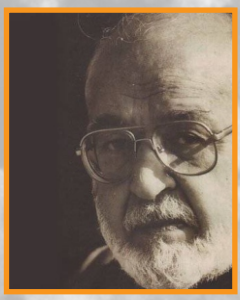

सच्चिदानंद हीरानंद
वात्स्यायन 'अज्ञेय'

एक दिन सहसा
सूरज निकला
अरे क्षितिज पर नहीं,
नगर के चौक -
धूप बरसी
पर अन्तरिक्ष से नहीं,
फटी मिट्टी से।

छायाएँ मानव-जन की
दिशाहीन
सब ओर पड़ीं-
वह सूरज नहीं उगा था पूरब में,
वह बरसा सहसा
बीचों-बीच नगर के-
काल-सूर्य के रथ के
पहियों के ज्यों अरे टूटकर
बिखर गए हों दसों दिशा में।

कुछ क्षण का वह उदय-अस्त!
केवल एक प्रज्वलित क्षण की
दृश्य सोख लेने वाली एक दोपहरी।
फिर?
छायाएँ मानव-जन की
नहीं मिटीं लम्बी हो-हो कर-
मानव ही सब भाप हो गए।
छायाएँ तो अभी लिखी हैं
झुलसे हुए पत्थरों पर
उजरी सड़कों की गच पर।

मानव का रचा हुया सूरज
मानव को भाप बनाकर सोख गया।
पत्थर पर लिखी हुई यह जली हुई छाया
मानव की साखी है॥

रेडियम की छाया

सूनी आधी रात
चाँद-कटोरे की सिकुड़ी कोरों से
मन्द चाँदनी पीता लम्बा कुहरा
सिमट-लिपटकर।
दूर-दूर के छाँह-भरे सुनसान पथों में
चलने की आहट ओले-सी जमी पड़ी थी
भूरे पेड़ों का कम्पन भी ठिठुर गया था
कभी-कभी बस
पतझर का सूखा पत्ता गिरकर उड़ जाता
मरे स्वरों से खर-खर करता।
प्रथम मिलन के उस ठंण्डे कमरे में
छत के वातायन से
नींद भरी मन्दी-सी एक किरन भी
थककर लौट-लौट जाती थी
आलस-भरे अन्धेरे में
दो काली आँखों-सी चमकीली
एक रेडियम घड़ी सुप्त कोने में चलती
सूनेपन के हल्के स्वर-सी।
उन्हीं रेडियम के अंकों की
लघु छाया पर
दो छाँहों का वह चुपचाप मिलन था
उसी रेडियम की हल्की छाया में
चुपके का वह रुका हुआ
चुम्बन अंकित था
कमरे की सारी छाँहों के
हल्के स्वर-सा
पड़ती थीं जो एक-दूसरे में
मिल-गुँथकर।
सूनी-सी उस आधी रात।

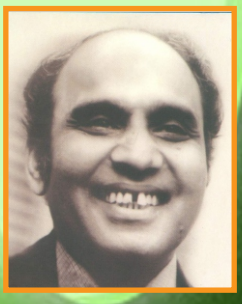

गिरिजाकुमार माथुर

उत्सव नक्षत्र

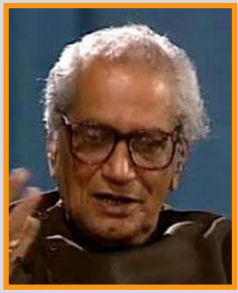

नरेश मेहता

कहाँ है?
अन्यत्र कहाँ है?
इस पृथ्वी से बड़ा उत्सव-नक्षत्र और कहाँ है?
गायत्री वर्ण वाली उज्ज्वल दिशाओं के, वेद
औषधियों के आगार-अरण्यों के, उपनिषद
ऊर्ध्व-रेतस वाले पर्वतों के, शतपथ ब्राह्मण
सर्वगम्या, सर्वसुलभा नदियों की, संहिताएँ।
एकाग्रमनस ब्रह्मचारियों जैसे प्रतापों के, स्तोत्र
सामयिक चारणों जैसी मेघों की, स्तुतियाँ
श्वेत-केश वाले संन्यासी-समय के, पुराण
हस्तामलकवत निद्राजयी समुदों के, भाष्य
और हरीद्र दूर्वाकुंरों जैसी आकुल, मानवीय प्रार्थनाएँ
तथा जिसे अनंत काल से
सूर्य के जलों
चंद्रमा के अमृत
और ग्रहों-नक्षत्रों के हिरण्य-पात्र अभिषेकित कर रहे हैं,
जिसे घटनाओं और कथानकों के वस्त्र धारण कराते हुए
काल का कृष्ण द्वैपायन
स्वयं एक चरित्र बन जाता है-
उस पृथ्वी-पार्थिव से बड़ा उत्सव नक्षत्र और कहाँ है?
अन्यत्र कहाँ है?
आदित्य की इस धर्मपत्नी पृथ्वी से बड़ा
उत्सव-नक्षत्र और कहाँ है?
कहाँ है? कहाँ है?

गणित का गीत

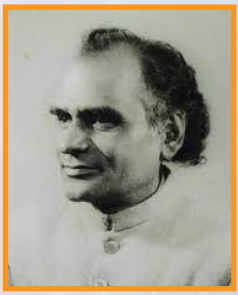

मुकुट बिहारी सरोज

हो गया है हर इकाई का विभाजन
राम जाने गिनतियाँ कैसे बढ़ेंगी?

अंक अपने आप में पूरा नहीं है
इसलिए कैसे दहाई को पुकारे
मान, अवमूल्यित हुआ है सैकड़ों का
कौन इस गिरती व्यवस्था को सुधारे
जोड़-बाक़ी एक से दिखने लगे हैं
राम जाने पीढियाँ कैसे पढ़ेंगी?

शेष जिसमें कुछ नहीं ऐसी इबारत
ग्रन्थ के आकार में आने लगी है
और मजबूरी, बिना हासिल किए कुछ
साधनों का कीर्तन गाने लगी है
मांग का मुद्रण नहीं करती मशीनें
राम जाने क़ीमतें कितनीं चढ़ेंगी?

भूल बैठे हैं, गणित, व्यवहार का हम
और बिल्कुल भिन्न होते जा रहे हैं
मूलधन इतना गँवाया है कि ख़ुद से
ख़ुद-ब-ख़ुद ही खिन्न होते जा रहे हैं
भाग दें तो भी बड़ी मुश्किल रहेगी
राम जाने सर्जनाएँ क्या गढ़ेंगी?

ऊर्जा का विज्ञान

रामायण धर द्विवेदी

देह रसायन शास्त्र-सरीखी
तिस पर प्राण एक ऊर्जा है
ऊर्जा का विज्ञान जटिल है

आग-हवा-पानी के ऊपर, एक क्रिया धरती-अम्बर की
बहुत गूढ़ यूँ तन का दर्शन, इसमें जगह न आडम्बर की
आडम्बर में नश्वर तन का
श्वास-श्वास का या फिर मन का
हर इक अनुसन्धान जटिल है

तन पर आँख-नाक के जैसे, पता नहीं कितने सेंसर हैं
जिनसे रूप-गन्ध-रस सब कुछ, हमको ज्ञात हुए बेहतर हैं
ज्ञान-इन्द्रियों के बिन लगता
जीवन ही जीवन को ठगता
जीवन का संज्ञान जटिल है

तन के भीतर श्वसन अंग है, या छलनी-सा इक फिल्टर है
प्रेम समेटे हुआ हृदय क्या, पीड़ा पर एक्यूपंक्चर है
हर इन्द्रिय को वश में करके
भीतर-भीतर ख़ुद से लड़ के
होना अन्तर्धान जटिल है

मजबूरी के अभियन्ता

अभिषेक औदिच्य

डाटा-सिस्टम की पुस्तक में ढूंढ रहे हम अलंकार हैं
मजबूरी के अभियन्ता हैं मन से केवल कलमकार हैं

'एन पी बाली' से ज़्यादा तो हमने 'जयशंकर' पढ़ डाले
पेपर से बस दो दिन पहले हमने हैं 'दिनकर' पढ़ डाले
हमें तरंगों के फीगर में 'कालिदास' की उपमा दिखती
और पढ़ानेवाली मैडम हमें 'उर्वशी' जैसी लगती
जान-बूझकर उस पेपर में फेल हुए हम तीन बार हैं

क्लासरूम से ज़्यादा हमने कैंटीन में क्लास लगाई
और वहीं चौपाल लगाकर ज़ोर-ज़ोर मधुशाला गाई
अगर कभी जो रेड मारने को एच ओ डी जी आती हैं
'अरे सुनाओ, अरे सुनाओ' -कहकर वहीं ठहर जाती हैं
असली नाम न जाने कोई, शायर कहते सभी यार हैं

प्रणय-गीत पर एम बी ए की एक सीनियर फिदा हुई थी
और आख़िरी सेमेस्टर में रोते-रोते विदा हुई थी
रोज़ हॉस्टल में यह खुसफुस- 'उसे बुलाओ, उसे बुलाओ!'
'उसने नीरज पढ़े हुए हैं, लव-लेटर उससे लिखवाओ'
इसीलिए ही गर्ल्स-हॉस्टल में हम चर्चित पत्रकार हैं

विज्ञान का दीपक

मानवर्द्धन कण्ठ

जले विज्ञान का दीपक - यही अपना इरादा है
कि लौ बुझने नहीं पाये, ये अरमां जां से प्यारा है

कोरोना का कहर बरपा, है अब संकट में मानवता
समय विकराल है आया, चतुर्दिक काल का साया
प्रलय ये कैसी आयी है, कि सहमा हर नज़ारा है

जो फैली ये महामारी, है विपदा की घड़ी आयी
जो लड़ना है कोरोना से, तो घर में ही ठहर भाई
करेगी एकजुट तकनीक, यही नूतन नज़ारा है

प्रखर हो चेतना का पुंज, तम फिर स्वयं मिटता है
कि निर्मल हो अगर अंतस, तभी तन शुद्ध होता है
हो आलोकित धरा-अम्बर, हमें देता सहारा है

करोड़ों हिन्द के वासी के हाथों में नई ज्योति
नई ऊर्जा, नई शक्ति, नवाचारी नई दृष्टि
दीया विज्ञान का जब हो, तभी छँटता अंधेरा है

ये भारत भूमि है सुन्दर, है संसाधन महा पावन
यहाँ अनमोल जन-जीवन, लगे हर पल यहाँ सावन
कि विज्ञानी हो हर इक मन, यही संकल्प प्यारा है

पण्डित सुरेश नीरव

ग्लोबल वार्मिंग

आज की तरक्की के रंग ये सुहाने हैं
डूबते जहाजों पे तैरते ख़ज़ाने हैं

ग्लेशियर के गलने से सूखते दहाने हैं
हाँफती-सी नदियों के लापता ठिकाने हैं

अब उजड़ते जंगल के लापता परिन्दों को
आ।सुओ की सूरत में दर्द गुनगुनाने हैं

वार्मिंग तो ग्लोबल है सब रुतें झुलसनी हैं
ज़लज़लों को तेवर भी अपने आज़माने हैं

आस्था सिसकती है पर्वतों के मलबे में
अब बिलखती धरती के क़र्ज़ भी चुकाने हैं

अब धुएँ की बस्ती में हँसते कारख़ाने हैं
आतिशी समन्दर में प्यास के तराने हैं

एटमी प्रदूषण के क़ातिलाना तेवर हैं
पाँव बूढ़ी पृथ्वी के अब तो डगमगाने हैं

सूर्य ग्रहण

गुरु सक्सेना

कोई लड़का, किसी लड़की के चक्कर लगाए
कोई खलनायक उनके प्यार में टांग अड़ाए
ये बात हमें अच्छी तरह से समझ में आती है
लेकिन यार ये पृथ्वी
सूर्य के चक्कर क्यों लगाती है
अपने को आकुल-व्याकुल किए,
मिलन की कामना लिए
एक लंबे समय के बाद
पूरी करने मुराद
जब उसके सूर्य से
मुलाकात करने का अवसर आता है
कम्बख़्त चन्द्रमा
दोनों के बीच में धँस जाता है
ये ओछेपन की निशानी है
लगता है किसी फिल्म की कहानी है
फ़िल्म में भी बिल्कुल इसी टाइप के दृश्य रहते हैं
विज्ञान वाले इसे सूर्यग्रहण क्यों कहते हैं
सूर्य स्वभाव से गम्भीर है, शरीर से बलिष्ठ है, धीर है
पृथ्वी से बड़ा है, इसलिए उसकी नज़रों में गड़ा है
अगर वह पृथ्वी को अपनाए
रूप राशि का समुचित लाभ उठाए
तो दोनों का पति-पत्नी के समान सुंदर जोड़ा बन जाता है
लेकिन ये बदमाश चन्द्रमा,
पृथ्वी से है तो चौथाई लेकिन उसके चक्कर लगाता है
और पृथ्वी जब
अपने बदलाव के लिए सूर्य के सामने आती है
तो पट्ठा पृथ्वी के पीछे छिप जाता है
मतलब सूर्य से डरता है,
ये सरासर कायरता है
चन्द्रमा के कारनामे बिल्कुल इसी टाइप के रहते हैं
विज्ञान वाले इसे सूर्य ग्रहण क्यों कहते हैं

तरुण कुमार

ब्रिटेन में कवि-सम्मेलन

भाग 01

हिंदी जगत् में सार्वजनिक कवि-सम्मेलनों का सूत्रपात लगभग 100 वर्ष पूर्व हुआ। उसके पहले तो देश में उर्दू मुशायरों का ही प्रचलन था। श्री शंभुनाथ त्रिपाठी द्वारा संपादित पुस्तक सनेही अभिनंदन ग्रंथ (पृ0-92) के अनुसार, "हिंदी जगत् में सर्वप्रथम सार्वजनिक कवि-सम्मेलन सन् 1922 ई. में हिंदी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर कानपुर नगर में आयोजित किया गया था।" सार्वजनिक कवि सम्मेलनों के सूत्रपात से हिंदी कवि सम्मेलन हिंदी कविता के प्रचार-प्रसार के माध्यम तो बने ही, जन-जागरण तथा सामाजिक एवं राष्ट्रीय कर्त्तव्य बोध की दिशा में भी इनका योगदान महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। स्वराज्य प्राप्ति की लालसा जगाने और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य पालन की दिशा में जन सामान्य को जागरूक करने में कवि-सम्मेलनों ने जिस महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है वह हिंदी साहित्य के इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है।

समय-समय पर शासन की त्रुटियों की ओर इंगित करते हुए जन भावनाओं की अभिव्यक्ति में भी मंचीय कवि पीछे नहीं रहे हैं। सच कहा जाए तो आज के मंचीय कवि ने जन भावनाओं के साहित्यिक प्रवक्ता का स्वरुप ग्रहण कर लिया है और किसी भी विषय पर किये जानेवाले भाषणों की तुलना में उसका काव्यपाठ जन-गण-मन को विशेष रुप से आंदोलित करता है। अपनी इन अनेक विशेषताओं के कारण हिंदी साहित्य की इस अभिनव विधा ने अल्पकाल में ही इतनी लोकप्रियता हासिल कर ली है कि आज देश के लगभग सभी भागों और विदेशों में भी प्रति वर्ष सैंकड़ों की संख्या में कवि सम्मेलनों का आयोजन किया जाने लगा है और इन कवि सम्मेलनों में श्रोताओं की संख्या लाखों तक जा पहुँचती है।

दुनिया का शायद ही कोई देश हो जहाँ भारतीय मूल के लोग नहीं रहते हों। यूएन की 2020 की रिपोर्ट के अनुसार विश्व में प्रवासियों की सर्वाधिक संख्या (लगभग 18 मिलियन) भारतीयों की है जो दुनिया के अलग-अलग देशों में रह रहे हैं। अलग-अलग कारणों से विदेशों में जाकर बसे भारतीय जहाँ कहीं भी गये अपनी भाषा और संस्कृति भी अपने साथ ले गये हैं। उनकी सबसे बड़ी ख़ासियत यह है कि उन्होंने स्थानीयता के साथ अपना अनुकूलन तो किया ही है, परंतु अपनी भाषा और संस्कृति को भी कभी नहीं छोड़ा। विदेशों में भारतीय संस्कृति और हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने में न केवल हिदी सिनेमा और संगीत की भूमिका रही है बल्कि हिदी कवि सम्मेलनों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पूरी दुनिया में, हिन्दी प्रेमी जहाँ कहीं भी हैं, हिन्दी कवि सम्मेलनों का आयोजन करवाते हैं। विश्व का कोई भी भाग आज कवि सम्मेलनों से अछूता नहीं है। भारत के बाद सबसे अधिक कवि सम्मेलन आयोजित करवाने वाले देशों में संयुक्त राज्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, ओमान, सिंगापोर, ब्रिटेन इत्यादि शामिल हैं। इन देशों में स्थित भारतीय दूतावासों और मिशनों की भी इन कवि सम्मेलनों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनमें से अधिकतर कवि सम्मेलनों में भारत के प्रसिद्ध कवियों को आमंत्रित किया जाता है।

ब्रिटेन में हिदी कवि सम्मेलनों का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। यद्यपि हिंदी प्रेमियों और हिंदी सेवियों के घरों में हिदी काव्य गोष्ठियों का आयोजन 1970 के दशक में आरंभ हो चुका था, परंतु पहला संस्थागत

सार्वजनिक कवि सम्मेलन वर्ष 1993 में आयोजित किया गया था, जिसमें कई हिंदी कवि और अच्छी खासी संख्या में दर्शक शामिल हुए थे। उसके बाद कवि सम्मेलनों का आयोजन ब्रिटेन स्थित हिंदी सेवी संस्थाओं और भारतीय उच्चायोग, लंदन के बार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का एक बड़ा हिस्सा बन गया। हिंदी का शायद ही कोई ऐसा प्रतिष्ठित कवि होगा जो इन कवि सम्मेलनों में भाग लेने के लिए ब्रिटेन न आया हो। काका हाथरसी, अशोक चक्रधर, रामदरश मिश्र, केदारनाथ सिंह, अरुण कमल, सीतेश आलोक, कन्हैयालाल नंदन, बेकल उत्साही, गोपालदास नीरज, बालकवि बैरागी, सुनील जोगी, नरेश शांडिल्य, सरोजनी प्रीतम, कुमार विश्वास, सभी लंदन में कविता पाठ कर चुके हैं।

1990 के दशक में डॉ लक्ष्मीमल्ल सिंघवी लंदन में भारत के उच्चायुक्त बनकर आये। डॉ सिंघवी न केवल एक कुशल राजनयिक बल्कि हिंदी के जाने-माने कवि और साहित्यकार भी थे। उनकी पत्नी श्रीमती कमला सिंघवी की भी हिंदी में गहरी रुचि थी। डॉ सिंघवी के कार्यकाल में लंदन में हिंदी के प्रचार-प्रसार के एक नए युग का आरंभ हुआ। यों तो हिंदी लेखन और अन्य गतिविधियाँ यहाँ पहले से भी हो रही थीं। लेकिन उच्चायुक्त के रूप में उनके लंदन आने के बाद हिंदी और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार की गतिविधियों में अभूतपूर्व गति आयी। उनके प्रोत्साहन से अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाएँ अस्तित्व में आयीं। हिंदी गोष्ठियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का दौर शुरू हुआ।

इस दौरान यूके हिंदी समिति एक बहुमुखी और गतिशील संस्था बनकर उभरी जिसकी स्थापना 1990 में ईस्ट लंदन में श्री प्रेमचंद सूद और उनके साथियों द्वारा की गयी थी। बाद में श्री पद्मेश गुप्त, श्रीमती उषा राजे सक्सेना और श्री केबीएल सक्सेना आदि इस संस्था से जुड़े और हिंदी के कार्यों में पूरी तन्मयता से जुट गये। 1993 में हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति के उन्नयन के लिए भारतीय उच्चायोग के सहयोग से अहिंसम भारतीय मैनचेस्टर संस्था और इंडियन एसोशिएसन मैनचेस्टर की डॉ लता पाठक, राम पांडे और डॉ रंजीत सुमरा द्वारा 25-26 सितंबर 1993 को दो दिवसीय भव्य अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस दो दिवसीय हिंदी सम्मेलन के कार्यक्रमों में विराट हिंदी कवि सम्मेलन, भाषा

सम्मेलन और सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। इस कवि सम्मेलन में भारत से आये कवियों में रमानाथ अवस्थी, हसरत जयपुरी, मजरूह सुल्तानपुरी, गोपालदास नीरज जैसे महान कवि और शायर शामिल थे। इस तरह के विराट कवि सम्मेलन से ब्रिटेन में रहनेवाले भारतवंशी और आप्रवासी भारतीय उत्फुल्ल हो उठे। यह उनके लिए एक नया अनुभव था। अपनी जड़ों की ओर लौटने और भारत को याद करने का एक सुनहरा अवसर। धीरे-धीरे भूले बिसरे हिंदी प्रेमी, हिंदी और हिंदी साहित्य से इस प्रकार जुड़ने लगे जैसे उनके अवचेतन मन में नई चेतना जागृत हो गई। इस तरह 1993 के कवि सम्मेलन की सफलता से प्रेरित होकर यूके हिंदी समिति के तत्काल अध्यक्ष डॉ पद्मेश गुप्त, उपाध्यक्ष उषा राजे सक्सेना, केबीएल सक्सेना एवं बृज गोयल और अन्य हिंदी प्रेमियों ने मिलकर डॉ लक्ष्मीमल्ल सिंघवी के संरक्षण और भारतीय उच्चायोग के सहयोग से प्रति वर्ष हिंदी दिवस के अवसर पर अतंरराष्ट्रीय कवि सम्मेलनों के आयोजन का सिलसिला आरंभ हुआ जो अब तक अनवरत रूप से जारी है।

1993 से भारत के लब्धप्रतिष्ठित कवियों -साहित्यकारों का हर वर्ष लंदन के अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन में भाग लेने के लिए आना प्रारंभ हो गया और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कवियों और साहित्यकारों को ब्रिटेन में एक साथ मंच मिलने लगा। हिंदी भाषी उस देश में अब खुलकर आपस में हिंदी बोलने लगे जहाँ हिन्दी पिछले तमाम वर्षों में लगभग निषिद्ध थी। वर्ष 1994 में इस कवि सम्मेलन का दायरा बढ़ा और इसमें तीन शहर जोड़े गए। इस वर्ष कवि सम्मेलनों का आयोजन मैनचेस्टर, यॉर्क और लंदन में हुआ। मैनचेस्टर में डॉ. अंजनी कुमार के संयोजन में हिंदी भाषा समिति और यार्क में डॉ. महेन्द्र वर्मा के संयोजन में भारतीय भाषा संगम और बेर्डफर्ड हिंदू मंदिर द्वारा इसे आयोजित किया गया। धीरे-धीरे इस कड़ी में यूनाइटेड किंगडम के कई अनेक शहर और कस्बे जुड़ते चले गये, जहाँ कवि सम्मेलनों का आयोजन किया जाने लगा था। बर्मिंघम में डॉ कृष्ण कुमार के संयोजन में गीतांजली बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय तथा नॉटिंघम में श्रीमती जय वर्मा के संयोजन में काव्यरंग द्वारा कवि सम्मेलनों का आयोजन किया जाने लगा।

भारत से आनेवाले कवियों को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा लंदन भेजने की व्यवस्था की जाती थी और स्थानीय आयोजक यहाँ

की सारी व्यवस्था देखते थे। 1993 से 2002 तक ब्रिटेन में हुए अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलनों में संयोजक की भूमिका में पद्मेश गुप्त थे। ये कवि सम्मेलन भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के तत्वावधान में लंदन स्थित नेहरु केंद्र के माध्यम से आयोजित कराए गए थे। उसके पश्चात इन कवि सम्मेलनों के संयोजन का दायित्व श्री केबीएल सक्सेना ने संभाला और वे इस आयोजन से वर्ष 2019 तक जुड़े रहे। 2020 का अंतरराष्ट्रीय विराट हिंदी कवि सम्मेलन, लंदन कोरोना की भेंट चढ़ गया। इन कवि सम्मेलनों में आरंभ में 4 कवि भारतीय सांस्कृतिक परिषद द्वारा प्रायोजित किए जाते थे। बाद में कवियों की संख्या 6 हो गई। इनमें 2 कवि हास्य रस के, 2 शृंगार के और 2 राष्ट्रप्रेम के कवि आते हैं। इन कवि सम्मेलनों मे कुछ स्थानों पर स्थानीय कवियों को भी काव्यपाठ का अवसर दिया जाता है। स्थानीय कवियों को अधिक अवसर प्रदान करने के लिये एक राष्ट्रीय कवि सम्मेलन की परंपरा की भी शुरुआत की गई है।

वार्षिक विराट हिंदी कवि सम्मेलनों के आयोजन में संयोजक की काफी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे आयोजक संस्थाओं और उच्चायोग के बीच की कड़ी होते हैं। आयोजक संस्थाओं के साथ मिलकर कार्यक्रम स्थल का निर्धारण, कवियों के ठहरने की व्यवस्था आदि देखना उनकी ज़िम्मेदारी होती है। संयोजक का मनोनयन उच्चायोग द्वारा किया जाता है। भारत के उच्चायोग, लंदन के अताशे (हिंदी व संस्कृति) इसके नोडल अधिकारी होते हैं जिनकी जिम्मेवारी पूरे कार्यक्रम की देखरेख करनी होती है। कवियों के लंदन आगंमन से लेकर उनके प्रस्थान तक की संपूर्ण जिम्मेवारी नोडल अधिकारी की होती है।

सुप्रसिद्ध राजनेता और कवि श्री केसरीनाथ त्रिपाठी इस कवि सम्मेलन से आरंभ से ही जुड़े रहे हैं। वे इस कार्यक्रम में अपने व्यय से एक कवि भी हर वर्ष अपने साथ लाते रहे हैं। जिन कवि सम्मेलनों में वे उपस्थित होते थे उन कवि सम्मेलनों का आयोजन उनकी अध्यक्षता में ही किया जाता था। 2018 के बाद स्वास्थ्य कारणों से उनकी भागीदारी नहीं हो पाई। लेकिन लगभग दो दशकों से भी अधिक समय तक वे इन कार्यक्रमों में शामिल होते रहे और अपनी गरिमामयी उपस्थिति से इन कवि सम्मेलनों का मान बढ़ाया।

वर्ष 2002 में हुई कुछ गड़बडियों के कारण वार्षिक विराट हिंदी कवि

सम्मेलनों के आयोजन की सारी जिम्मेवारी भारतीय उच्चायोग को अपने हाथों में लेनी पड़ी। उसके बाद से विदेश मंत्रालय द्वारा इसके लिए वित्तीय व्यवस्था की जाने लगी। कवियों के लिए मानदेय और प्रशस्ति पत्र, आदि का प्रावधान किया गया। वर्ष 2008 में भारत का उच्चायोग, लंदन में अताशे हिंदी श्री आनंद कुमार आए। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय विराट हिंदी कवि सम्मेलन की इस शृंखला में उत्तरी आयरलैंड की राजधानी बेलफास्ट को जोड़ा। वर्ष 2015 तक इस कवि सम्मेलन से यूके के 10 शहर जुड़ चुके थे। वर्ष 2016 में भारतीय उच्चायोग में तरुण कुमार के हिंदी अताशे के रुप में कार्यभार ग्रहण करने के बाद उच्चायोग की हिंदी की गतिविधियों में उल्लेखनीय रूप से तेज़ी आई। वार्षिक विराट हिंदी कवि सम्मेलनों के दायरे का भी काफी विस्तार हुआ। उनके प्रयास से वर्ष 2017 में स्कॉटलैंड के दो शहरों एडिनबरा और ग्लासगो को इन कवि सम्मेलनों की शृंखला में शामिल किया गया। यद्यपि वर्ष 2010 में भी ग्लासगो के हिंदू मंदिर में हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था परंतु कुछ कारणों से आनेवाले वर्षों में यहाँ यह कार्यक्रम नहीं हो पाया। वर्ष 2017 में प्रधान कौंसलावास, एडिनबरा की प्रधान कौंसल सुश्री अंजू रंजन के सहयोग से यहाँ पुनः कवि सम्मेलन आरंभ किया गया। वर्ष 2018 में इसका विस्तार यूके की सीमा के बाहर आयरलैंड की राजधानी डब्लिन तक हो गया। यद्यपि आयरलैंड एक अलग देश है और यह भारत के उच्चायोग, लंदन के अधिकार क्षेत्र के बाहर है फिर भी तत्कालीन मंत्री (समन्वय) श्री ए.एस. राजन के सहयोग से वैदिक संस्कृति सोसाइटी, डब्लिन के संयोजन में यह कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। यह आयरलैंड के भारतीय समुदाय के लोगों के लिए एक ऐतिहासिक दिन था क्योंकि इस देश में पहली बार किसी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था। सभी श्रोता इस कवि सम्मेलन में भारत से आए कवियों के काव्यपाठ को सुनकर अभिभूत थे।

भारत के उच्चायोग, लंदन और आईसीसीआर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अंतरराष्ट्रीय विराट हिन्दी कवि सम्मेलन, 2018 में 15 दिनों की यात्रा में कुल 13 शहरों यथा बेलफास्ट, डब्लिन, कार्डिफ, बाथ, बर्मिंघम, नाटिंघम, मैनचेस्टर, एडिनबरा, ग्लास्गो, लिवरपुल, लंदन, स्लॉव, और साउथऑल में कवि सम्मेलनों का आयोजन किया गया। इस वर्ष आईसीसीआर द्वारा इन कवि सम्मेलनों में भाग लेने के लिए

भारत से छह कवियों- डॉ. कुंवर बेचैन, डॉ कीर्ति काले, डॉ. कविता किरण, मनवीर मधुर, डॉ. अनिल चौबे और मदन मोहन समर को यू.के. भेजने की व्यवस्था की गई।

वर्ष 2019 में अंतर्राष्ट्रीय विराट हिन्दी कवि सम्मेलन लंदन, 2019 का आयोजन यूके के विभिन्न शहरों में 19 सितंबर से 05 अक्टूबर 2019 तक किया गया। इस वर्ष आईसीसीआर द्वारा इन कवि सम्मेलनों में भाग लेने के लिए भारत से सात कवियों- डॉ राजेश रेड्डी, श्री अशोक चारण, श्री अर्जुन सिसौदिया, सुश्री कीर्ति माथुर, सुश्री सोनरूपा विशाल, श्री सुदीप भोला और सुश्री शबनम अली को यू.के. भेजने की व्यवस्था की गयी। सभी कविगण कार्यक्रम आरंभ होने से पहले निर्धारित समय पर आ गये और पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

कवि सम्मेलनों की इस शृंखला का आरंभ उत्तरी आयरलैंड के ख़ूबसूरत शहर बेलफास्ट से हुआ जहाँ भारतीय समुदाय के लगभग 10000 लोग रहते हैं। काव्ययात्रा का दूसरा पड़ाव बेलफास्ट से लगभग 100 मील दूर आयरलैंड की राजधानी डब्लिन में था जहाँ कविता का रंग ख़ूब जमा। भारत से आये कवियों की कविताओं को जिस तरह से डब्लिन में सराहा जाता है, वह अद्भुत है। 16 दिनों की अपनी यात्रा के दौरान कवियों ने बेलफास्ट के अलावा कार्डिफ, ब्रिस्टल, मैनचेस्टर, बर्मिंघम, नौटिंघम, एडिनवरा, ग्लास्गो, लिवरपूल, इंडिया हाउस, लन्दन, स्लाव, ऑस्टर्ली पार्क में आयोजित कवि सम्मेलनों में अपनी उत्कृष्ट रचनाओं का पाठ किया। बेलफास्ट में इसका आयोजन इंडियन कम्यूनिटी सेंटर द्वारा बेलफास्ट हिंदू मंदिर में, डब्लिन में वैदिक हिंदू सोसाइटी, कार्डिफ में इंडिया सेंटर, ब्रिस्टल में डॉक्टर्स संघ और हिंदू मंदिर, मैनचेस्टर में वैदिक हिंदू सोसाइटी, बर्मिंघम में गीतांजली बहुभाषी साहित्यिक समुदाय, नौटिंघम में काव्यरंग, एडिनबरा में प्रधान कौंसलावास, ग्लास्गो में हिंदू मंदिर, लिवरपुल में राधा कृष्ण मंदिर, लंदन में इंडिया हाउस, स्लाव में श्रीराम शर्मा मीत के संयोजन में हिंदू मंदिर, साउथऑल में रवि शर्मा और अंतर्राष्ट्रीय हिंदी परिषद् और टूटिंग में हिंदू मंदिर द्वारा इनका आयोजन किया गया।

यों तो देखने में यह कार्यक्रम थकान उत्पन्न कर सकता है। लेकिन हर अगले दिन एक नए कवि सम्मेलन और एक नए शहर को देखने की उत्सुकता के कारण और साथ ही जितनी आत्मीयता और प्रेम से

प्रवासी संसार में रहनेवाले भारतवंशी भारत से आनेवाले कवियों से मिलते हैं और जिस प्रकार से उनका स्वागत करते हैं उससे थकान कभी शरीर और मन पर हावी नहीं होती है। आरंभ से लेकर अंत तक पूरे यूके की लगभग 2200 मील यानी 3250 किलोमीटर की सड़क यात्रा होती है जिसमें यूनाइटेड किंगडम के प्राचीन वैभव से लेकर आधुनिक जीवन की झलक देखने को मिलती है। आमतौर पर यह कवि सम्मेलन हिंदी दिवस के बाद वाले सप्ताह में आरंभ होता है। यह समय इंग्लैंड की सैर के लिए बहुत उपयुक्त होता है जब न तो गर्मी होती है और न सर्दी। गुनगुनी ढंड और पतझड़ का मौसम आरंभ हो चुका होता है जो ब्रिटेन में काफी रंगीन और खूबसूरत माना जाता है।

इन कवि सम्मेलनों का जनता को वर्ष भर इंतजार रहता है। ये एक तरह से हिंदी के वार्षिक सम्मेलन हैं। इन कवि सम्मेलनों में स्थानीय कवियों को भी जनता तक पहुँचने का अवसर मिलता है। श्रोताओं में केवल हिंदी के लेखक और कवि ही नहीं, सामान्य लोग भी होते हैं। इनमें पंजाबी, बंगला, गुजराती और अन्य भाषा भाषी भी शामिल होते हैं। स्लाव में प्रायः श्रोताओं में न केवल भारतीय बल्कि पाकिस्तानी मूल के लोगों की भी उपस्थिति देखी जाती है। इस तरह यह कवि सम्मेलन विभिन्न भाषा-भाषियों, वर्गों और देशों के लोगों को जोड़ने का भी काम करता है। भारत के उच्चायोग, लंदन के तत्वावधान में आयोजित इन कवि सम्मेलनों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं बल्कि इनका उद्देश्य ब्रिटेन में हिंदी और भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना है। कहते हैं भाषा संस्कृति की संवाहक होती है और संस्कृति के संवहन का कार्य यदि कवियों द्वारा किया जाये तो इससे अधिक प्रभावी कुछ नहीं हो सकता। कहने की आवश्यकता नहीं है कि इन कवि सम्मेलनों के आयोजन से ब्रिटेन में भारतीय मूल के लोगों के बीच हिंदी भाषा के साथ-साथ भारतीय मूल्यों, संस्कृति, संस्कारों और भारत के प्रति राष्ट्रप्रेम का संचार हुआ है।

इश्क़ इक साइंस है या आर्ट, समझा कर लिखो
या कि दोनों इश्क़ का हैं पार्ट, समझा कर लिखो

-दिलावर फ़िगार

KAVIGRAM

ग्रासिम स्टाफ क्लब के मंच पर वातायन के माध्यम से आयोजित कवि-सम्मेलन में डॉ. कुँअर बेचैन, अरुण जैमिनी, पी ए फडके, हरेश चतुर्वेदी और जगन्नाथ विश्व

कवि-सम्मेलन संग्रहालय में कवि-सम्मेलन के पुराने चित्र, निमन्त्रण पत्र, चिट्ठियाँ, कतरनें तथा अन्य दस्तावेजों को संग्रहीत करने का कार्य प्रगति पर है। दाहिनी ओर दिये गये लिंक पर स्पर्श करके आप इस खण्ड के अन्य चित्र देख सकते हैं

कवि सम्मेलन संग्रहालय

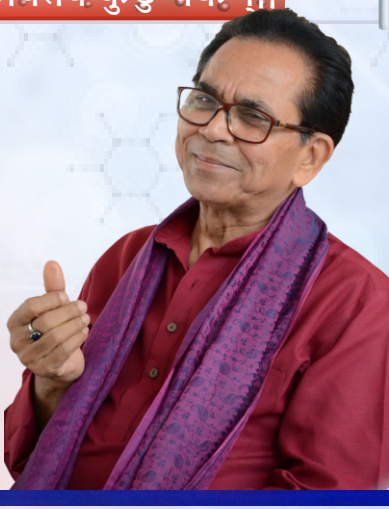

पार्टनर! कविता जैसी स्टोरी बना दो

प्रो. अशोक चक्रधर

भाग 10

ऑस्ट्रेलिया से दिल्ली लौटते समय ही सूचना मिल गयी थी कि ट्रेड-मिल पर दौड़ लगाते हुए प्रिय मित्र राजू श्रीवास्तव गिरे, आहत हुए और मूर्च्छितावस्था में एम्स पहुँचाये गये।

अरे! मन व्यथित हो गया।

दिल्ली आये तो पता लगा कि युवा कवयित्री शालिनी सरगम नहीं रहीं।

अरे! भरोसा करने में देर लगी।

नोएडा में भ्रष्टाचारी ट्विन टावर गिरा दी गयी।

अरे! मनुष्य भ्रष्टाचारी हो सकते हैं, टॉवर कैसे हो गयी? घरौंदा-कामी ख़रीददारों के सपने चूर-चूर हो गये।

सन् उन्नीस सौ इक्यानबे, गोर्बाचेव के काल में लगभग सत्तर साल पुराना सोवियत ढाँचा भी भरभराकर गिर गया था। तब भी मुँह से निकला था- अरे! एक झटके में उस महाशक्ति के पन्द्रह टुकड़े हो गये थे।

अरे! कहाँ थे गोर्बाचेव? इकतीस वर्ष की लगभग गुमनामी के बाद अचानक समाचार मिला की गोर्बाचेव तीस अगस्त दो हज़ार बाईस को काल-कलवित हुए। उन्हें शीत-युद्ध समाप्त कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए नोबेल विश्व शांति पुरस्कार मिला था, धुंधला-धुंधला याद आया।

और अब सन् दो हज़ार बाईस में इसी आठ सितम्बर को, सत्तर साल तक राजशाही व्यवस्था में शासन करने के बाद इंग्लैंड की महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय का निधन हो गया। मुँह से निकला- अरे! अभी हाल ही में तो उनकी पुरानी राजशाही के सत्तरसाला सुशासन का जश्न मनाया गया था। उन्नीस सितम्बर को उन्हें सुपुर्दे-भूमि कर दिया गया। किसी मानवी की इतनी लम्बी शव-यात्रा इतिहास में न निकली होगी। और अगर निकली भी होगी तो एक साथ इतने लोगों ने न देखी होगी।

ख़ैर जी, जब हम सोवियत संघ गये थे तब शीत-युद्ध अपने चरम पर पहुँचने के बाद चरमरा रहा था। मॉस्को में दो शब्दों का दबा-ढका बोलबाला था, 'ग्लासनोस्त', यानी खुलापन और 'पेरिस्त्रोईका', यानी नये सुधारों को लागू कराना। इनके ज़रिये सोवियत संघ में व्यक्तिगत आज़ादी की दबी-घुटी मांग खुलकर दिखने लगी थी। ग्लासनोस्त से पहले महिलाओं के मेकअप पर पाबंदी हुआ करती थी, लेकिन मिखाईल गोर्बाचेव ने छूट दे दी, तो महिलाओं के व्यवहार में भारी परिवर्तन आया। वे आवश्यकता से कहीं अधिक मेकअप करने लगीं। गालों पर रूज़ और अधरों पर लिपस्टिक में तीन सौ प्रतिशत की बढ़ोतरी हो गयी। सोवियत संघ के सिद्धांतों के पतन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी, क्योंकि धरती के अंदर-अंदर संघ के विभिन्न देशों में व्यक्तिगत और सांस्कृतिक-आध्यात्मिक आज़ादी का अवा पक रहा था। गोर्बाचेव स्वयं अपने संघ का 'आयरन कर्टेन' अर्थात् लौह-पर्दा खोल रहे थे। पर्दा खुला और दुनिया ने देखा- 'सोवियत संघ में भारत महोत्सव'। और, अपन गये थे महोत्सव के उद्घाटन समारोह का आँखों देखा हाल सुनाने।

सुनिए आगे का अहवाल-

मॉस्को के मस्क्वा होटल में भारत महोत्सव की तरह-तरह की तैयारियाँ। हर पल भाग-दौड़। बीस घण्टे का दिन, सिर्फ चार घण्टे की रात।

अधिकांश सोवियत सहयोगी शाम पाँच बजते ही चले जाते थे। उसके बाद लगता था जैसे होटल के उस एक हिस्से में भारतीयों का राज आ गया हो। रिसेप्शन काउंटर, आवश्यक सेवाओं और छोटी-छोटी खान-पान की दुकानों के अलावा रूसी कहीं दिख नहीं रहे थे। चाय पीनी हो तो होटल के आंतरिक गलियारे के किसी भी मोड़ पर रुककर अपने आप बना लो, कोई पैसा नहीं लगता था। हाँ, चाय में डालने के

लिए दूध नहीं मिलता था। जितने दिन मास्को रहा काली चाय पी और मुँह को ऐसी लगी कि आज भी अगर मिल जाए तो काली चाय ही पसन्द करता हूँ।

हिन्दी-रूसी कामकाजी संवाद का एक गुटका हर समय मेरे पास रहता था। वैसा ही गुटका जैसा 'मेरा नाम जोकर' में राजकपूर अपने पास रखते थे। 'दा-दा' और 'नियत-नियत' मैं भी करने लगा। ज़रूरत के समय अपना काम निकालने में वह गुटका सचमुच एक वरदान था। युवा कवि अनिल जनविजय ने एक नेक सलाह दी, जो अनेक बार उपयोग में लायी गयी। उन्होंने कहा- 'दुकान पर काम करनेवाली इन लिपी-पुती महिलाओं से कोई सामान लेने से पहले कुछ और भी बोला करिए। कुछ वाक्य बताता हूँ, रट लीजिए'। उन्होंने कुछ वाक्य बताये, दो मुझे याद हो गये। पहला था- 'वी ओचिन क्रासीवया', अर्थात्- आप बहुत सुन्दर हैं, और दूसरा- 'मिये ओचिन ब्रावीचेस', अर्थात् आप मुझे पसंद हैं। पहले वाक्य का तो मैंने जमकर प्रयोग किया, लेकिन दूसरे वाक्य को प्रयोग करने का न तो मैं साहस जुटा पाया और न अंदर से मन हुआ।

अनिल और तान्या की मदद से जानकारियाँ इकट्ठी करके मैं समकालीन रूसी साहित्यकारों पर एक स्टोरी बनाना चाहता था। अनिल ने एक युवा रूसी साहित्यकार एलेक्सान्द्र इवानोव से मिलवाया। अनातोली पारपरा के साथ अनेक युवा लेखकों का ज़िक्र किया। रूसी साहित्य के यशस्वी अनुवादक डॉ. मदनलाल मधु से भी मुलाक़ात हुई। वे सब हर प्रकार से मेरी सहायता करने को प्रस्तुत थे। हमने साथ-साथ गोर्की, पुश्किन, मायकोव्स्की के संग्रहालय देखे। गोर्की साहित्य संस्थान जाने का सुयोग भी मिला। स्टोरी के लिए अच्छी रूपरेखा बन गयी और जैसे ही कैमरा मिला, संग्रहालयों के आसपास जाकर मैं अच्छी-ख़ासी शूटिंग कर लाया। सरीन साहब ने एडिट की। मैं अपने किये गये काम से बहुत संतुष्ट तो नहीं था, फिर भी लगभग पाँच मिनिट की वह एक सूचना-प्रधान उपयोगी स्टोरी थी। पर अफ़सोस कि हमारी एक प्रोड्यूसर सबा ज़ैदी साहिबा को पसन्द नहीं आयी। उनका कहना था- 'हम यहाँ साहित्य का प्रोग्राम नहीं बना रहे, कल्चर पर कुछ होना चाहिए। सॉरी अशोक जी, आपका टाइम वेस्ट हुआ'। मैंने वहीं खड़े ए.डी.जी. शिव शर्मा जी की ओर कातर दृष्टि से देखा। कुछ पल वे मौन रहे, फिर मुझे सांत्वना देते हुए बोले- 'टाइम

वेस्ट नहीं हुआ अशोक, किया हुआ काम कभी बेकार नहीं जाता, ये स्टोरी भारत लौटकर कभी दिखा देंगे'।

मैं मॉस्को में अपनी पहली स्टोरी बनाकर लाया था। 'अपना उत्सव' का ठीक-ठाक सा अनुभव मेरे पास था। असफलता मुझे जीवन में कभी अच्छी नहीं लगी। कुछ स्तब्ध-सा रह गया। राजीव मेहरोत्रा मेरी स्थिति को भाँप रहे थे। उन्होंने मेरा कंधा थपथपाया। थोड़ी देर में कमरे की बातचीत का विषय बदल गया। तीन जुलाई! मुख्य काम तो आँखों देखा हाल सुनाने का है। उसमें सिर्फ तीन दिन हैं। सबको अपेक्षित निर्देश देकर शर्मा जी निकल गये। मैं सोचने लगा, सबा शायद ठीक कह रही हैं, साहित्य का प्रोग्राम नहीं, कल्चर पर कुछ होना चाहिए। तात्कालिक रूप से मैंने मौन धारण कर लिया।

विनोद दुआ पता नहीं कहाँ थे? एडिटिंग रूम में राजीव महरोत्रा और कोमल जी. बी. सिंह के साथ इस बात पर विमर्श चला कि मैं और किन विषयों पर स्टोरीज़ बना सकता हूँ। अंततः राजीव बोले- 'विषय छोड़िए! कैमरामैन को लेकर गाड़ी में निकल जाइए। जो दिखे, कवि जी, शूट कर लाइए। लेकिन कहानी तभी बनेगी जब रात में कैमरामैन साहब को अपने कमरे में बढ़िया वाली वोद्का ऑफर करेंगे।' फिर थोड़े अनौपचारिक होते हुए बोले- 'जैसे अपनी कविता लिखते हो पार्टनर, वैसे ही कविता जैसी स्टोरी बना दो।' कोमल ने हौसला बढ़ाया- 'रीयली, अशोक जो भी बोलते हैं, पोयट्री लगती है, आई स्वियर'। कोमल ने सोफ़े पर पालती मार ली, राजीव ने दोनों हाथों को गर्दन पर टिकाते हुए पैर लम्बे कर लिये। तीन तारीख़ के लिए अभी तक रूसियों की ओर से मिनिट-टू-मिनिट प्रोग्राम नहीं आया था। महोत्सव का भारतीय सचिवालय कार्यक्रम को अंतिम रूप देने में जी-जान से जुटा था।

मैंने एक मिनट की भी देर किए बिना वहाँ से निकल लेना बेहतर समझा। बगल के कमरे में, जहाँ कुछ और एडिटिंग टेबल्स थीं, मैंने देखा कि विनोद दुआ बैठे अपनी कोई स्टोरी एडिट करा रहे हैं। बात किसी प्रतियोगिता की नहीं थी, पर मुझे भी तो कुछ करके दिखाना था। मैं बेताब था कि कैमरामैन मिले और मैं निकलूँ। कैमरामैन डी. वी. मल्होत्रा जी मिल गये, लेकिन उनको किसी प्रोड्यूसर की अनुमति की आवश्यकता थी। अब मैं ढूंढने लगा प्रोड्यूसर को। चौधरी रघुनाथ सिंह मुझसे स्नेह मानते थे पर कहीं और व्यस्त रहे होंगे। हड़बड़ाते हुए विजय कुमार दिखायी दिये। मेरा निवेदन सुनकर बोले- 'बॉस, देखो! मेरा

फील्ड है स्पोर्ट्स का। सबा ज़ैदी से बात कर लो ना'! सबा भी वहीं बैठी थीं। बिना मेरी ओर देखे बोलीं- 'आई कान्ट स्पेयर ऐनी कैमरा मैन राइट नाउ, सॉरी'!

एक पल को तो मेरे मस्तक में खुन्दक का ज्वालामुखी फूटने-फूटने को हुआ, पर किसी तरह ज्वालामुखी पर मुस्कान का ढक्कन लगाकर मैंने कहा- 'सबा जी! पिछले दो घंटे से मल्होत्रा साहब और उनका कैमरा कुछ कर गुज़रने की तमन्ना में हैं, हम आधे घंटे में आते हैं, सिर्फ आधा घंटा'। सबा ने बात अनसुनी कर दी और विनोद के पास जाकर उन्हें कोई राय देने लगीं। मैं अजीब सी असहायता से गुज़र रहा था कि तभी राजीव वहाँ से गुज़रे- 'अरे! आप लोग गये नहीं अभी? मल्होत्रा जी! अशोक जी के साथ एक राउंड लगाकर आइये'।

सबा कुछ कहतीं इससे पहले मल्होत्रा साहब ने कैमरा उठा लिया और मुझसे इशारों में कहा कि निकल लो। तान्या, मेरी दुभाषिया जो सब कुछ देख रही थी बिजली की तरह उठी और मेरा चमड़े का बैग उठाकर चलने लगी। मैंने उसे धन्यवाद दिया और थैला वापस ले लिया। सबा ने पीछे से आवाज़ लगाई- 'प्लीज़ कम बैक इन थट्टी मिनिट्स'। राजीव ने कहा- 'फॉटी फाइव मिनिट्स, फ़िफ़्टीन मोर फ्रौम सबा'। सबा ने राजीव के हाथ पर हाथ मारा और जो मौका हमारे हाथ लगा उसे अब गँवाना नहीं चाहते थे।

होटल से निकले। तान्या ने रूसी भाषा में ड्राइवर को कुछ समझाया। ड्राइवर इतनी फुर्ती से स्टेयरिंग पर बैठा जैसे मोर्चे पर जाना हो। सामने से आते हुए अनिल दिखे तो मैंने तान्या से गाड़ी रुकवाने को कहा, 'अरे, रोको रोको'! बड़ा तगड़ा ब्रेक लगा, पर अनिल के कारण ही मेरी स्टोरीज़ को ब्रेक मिला। हमने उन्हें झटपट कार में बिठाया।

अब आगे सुनाएंगे आगे के 'अरे' की कहानी। अरे! मौक़ा मिला है तो शानदार स्टोरी बनाएंगे, अब साहित्य से कल्चर की ओर जाएंगे!

फ़िलहाल कामना करते हैं कि दिवंगत राजू श्रीवास्तव के हास्य-बोध और शालिनी सरगम के गीतों पर कविग्राम एक पुस्तिका बनाये, ट्विन टावर के घरौंदा-कामियों के सपनों की तामीर हो और पुतिन और किंग चार्ल्स जैसे उत्तराधिकारी वसुंधराधिकारी बनने की कोशिश न करें। जब मन शांति चाहे, अपने यहाँ 'भारत महोत्सव' करा लें। कवियों को बुला लें। अशोक चक्रधर

शालिनी सरगम
25/01/1978 - 16/08/2022

सत्यदेव हरियाणवी
20/09/1942 - 29/08/2022

राजू श्रीवास्तव
25/12/1963 - 21/09/2022

अशोक सुन्दरानी
19/09/1960 - 24/09/2022

KAVIGRAM

प्रिय पाठको!

कविग्राम आपका अपना परिवार है। कविता को समर्पित इस मंच को आपकी केवल इतनी सहायता चाहिए कि आप इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने में हमारा सहयोग करें। स्मरण रहे, जब भी आप यह पत्रिका किसी को अग्रेषित करते हैं तो आप डिजिटल संचार माध्यमों के सृजनात्मक बने रहने की आशा में एक किरण जितना योगदान कर रहे होते हैं। अच्छा पढ़ें, अच्छा पढ़वाएँ!

इस अंक में इतना ही। अगले अंक में ढेर सारी उपयोगी सामग्री के साथ फिर मिलेंगे। कविग्राम से जुड़ने के लिए नीचे दिये गये बटन स्पर्श करें।

KAVIGRAM.COM

मुखपृष्ठ | फिल्म निर्माण | कविग्राम फेसबुक समूह
प्रकाशन | कविग्राम पत्रिका | कविग्राम फेसबुक पेज
काव्यलोक | कवि-सम्मेलन बुकिंग | कविग्राम ट्विटर
समाचार लोक | कवि-सम्मेलन संग्रहालय | कविग्राम इंस्टाग्राम
पुराने चावल | सम्पर्क | कविग्राम यू-ट्यूब